# परमात्म ऊर्जा

अपने आपको सदा शिवशक्ति समझ कर हर कर्म करती हो? अपने अलंकार व अष्ट भुजाधारी मूर्त सदा अपने सामने रहती है? अष्ट भुजाधारी अर्थात् अष्ट शक्तिवान। तो सदा अपने अष्ट शक्ति स्वरूप स्पष्ट रूप में दिखाई देते हैं? शक्तियों का गायन है ना- शिवमई शक्तियां। तो शिव बाबा की स्मृति में सदा रहती हो? शिव और शक्ति- दोनों का साथ-साथ गायन है। जैसे आत्मा और शरीर- दोनों का साथ है, जब तक इस सृष्टि पर पार्ट है तब तक अलग नहीं हो सकते। ऐसे ही शिव और शक्ति - दोनों का भी इतना ही गहरा सम्बन्ध है, जो गायन है शिवशक्तिपन का। तो ऐसे ही सदैव साथ का अनुभव करती हो व सिर्फ गायन है? सदा साथ ऐसा हो जो कोई भी कब इस साथ को तोड़ न सके, मिटा न सके। ऐसे अनुभव करते हुए सदा शिवमई शक्ति स्वरूप में स्थित होकर चलो तो कब भी दोनों की लगन में माया विघ्न डाल नहीं सकती।

कहावत भी है - दो दस के बराबर होते हैं। तो जब शिव और शक्ति दोनों का साथ हो गया तो ऐसी शक्ति के आगे कोई कुछ कर सकता है? इन डभले शक्तियों के आगे और कोई भी शक्ति अपना वार नहीं कर सकती व हार खिला नहीं सकती। अगर हार होती है व माया का वार होता है, तो क्या उस समय शिव शक्ति स्वरूप में स्थित हो? अपने अष्ट शक्तियां सम्पन्न सम्पूर्ण स्वरूप में स्थित हो? अष्ट शक्तियों में से अगर कोई भी एक शक्ति की कमी है तो अष्ट भुजाधारी शक्तियों का जो गायन है वह हो सकता है? सदैव अपने आपको देखो कि हम सदैव अष्ट शक्तियों को धारण करने वाले हैं? वही अष्ट देवताओं में आ सकते हैं। अगर अपने में कोई भी शक्ति की कमी अनुभव करते हो तो अष्ट देवताओं में आना मुश्किल है। और अष्ट देवता सारी सृष्टि के लिए इष्ट रूप में गाये और पूजे जाते हैं। तो भक्ति मार्ग में इष्ट बनना है व भविष्य में अष्ट देवता बनना है तो अष्ट शक्तियों की धारणा सदैव अपने में करते चलो।

इन शक्तियों की धारणा से स्वतः ही और सहज ही दो बातों का अनुभव करेंगे। वह कौन-सी दो बातें? सदा अपने को शिव शक्ति व अष्ट भुजाधारी अथवा अष्ट शक्तिधारी समझने से एक तो सदा साथीपन का अनुभव करेंगे और दूसरा सदा अपनी स्टेज साक्षीपन की अनुभव करेंगे। एक साथी और दूसरा साक्षी, यह दोनों अनुभव होंगे, जिसको दूसरे शब्दों में साक्षी अवस्था अर्थात् बिन्दु रूप की स्टेज कहा जाता है और साक्षीपन का अनुभव अर्थात् अव्यक्त स्थिति का अनुभव कहा जाता है। अष्ट शक्ति की धारणा होने से इन दोनों स्थिति का अनुभव सदा सहज और स्वतः करेंगे।

# कथा सरिता

## सही मार्गदर्शन और सही संगत जीवन को बदल देती

एक लड़का जिसका नाम बबलू था। वह पढ़ाई में रूचि नहीं रखता था उसे पढ़ाई बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती थी। वह स्कूल से भाग आता था जिस कारण गांव का प्रत्येक शिक्षक उस बच्चे से परेशान हो गया था। बबलू के पिता बबलू से बहुत ज़्यादा प्यार करते थे उन्हें लगने लगा था कि बबलू की किस्मत में पढ़ाई नहीं है। वह अपने बच्चों को परेशान नहीं देख सकते थे, इसलिए उन्होंने विचार बना लिया कि अब वह बबलू को पढ़ाएंगे नहीं बल्कि बबलू जो चाहता है वह उसे करने देंगे।

परंतु बबलू की माँ ज़िद्दी थी। वह नहीं चाहती थी कि बबलू अनपढ़ रहे, बबलू की ना पढ़ने की ज़िद्दी का मुख्य कारण उसकी संगत भी थी। उसके साथ का कोई भी विद्यार्थी पढ़ाई में रूचि नहीं रखता था इसलिए बबलू की माँ ने उसे उसकी मौसी के घर भेज दिया। जहाँ बबलू का दाखिला एक प्राइवेट स्कूल में कराया गया। जब भी बबलू के पिता उसे स्कूल में मिलने जाया करते थे तब बबलू अपने पिता के गले लग कर बहुत रोता था। परंतु बबलू के पिता मजबूर थे। वह उसे वापस नहीं ले जा सकते थे। बबलू को अभी भी शिक्षा में कोई रूचि नहीं थी परंतु समय के साथ उसके अच्छे दोस्त बनते गए और संगत के कारण उसे भी पढ़ाई में रूचि होने लगी और उसे किताबें पढ़ना अच्छा लगने लगा।

बबलू ने कई सालों तक पढ़ाई करी और वह पढ़ने में बहुत अच्छा हो गया।

बबलू की माँ उसे गाँव नहीं आने देती थी उन्हें डर था कि बबलू कहीं फिर से अपने मकसद को ना भूल जाए। बबलू कई सालों तक अपने गाँव नहीं आया और उसने बहुत मेहनत से पढ़ाई करी।

एक समय ऐसा आया जब बबलू आईपीएस अफसर बन गया और वह अपने गाँव आया तब उसने देखा कि उसके साथ खेलने वाले विद्यार्थी जो पढ़ते नहीं थे, वह आज के समय मजदूरी कर रहे हैं और उनकी हालत ऐसी है कि यदि वह आज नहीं कमाएंगे तो कल नहीं खा पाएंगे।

क्योंकि वह पढ़े-लिखे नहीं हैं। उसने गाँव के हर बच्चे को देखा जिसकी हालत ऐसी ही थी क्योंकि उनके माँ-बाप ने उनकी हरकतों को देखते हुए उन्हें पढ़ाने का विचार बदल दिया था परंतु बबलू की माँ ने हार नहीं मानी और बबलू एक बड़ा अफसर बन गया।

जिसके बाद बबलू अपनी माँ के पास गया और उनके चरणों में गिरकर उनका धन्यवाद किया। तब बबलू की माँ ने रोते हुए बबलू को अपने गले से लगाया और कहा बचपन में तुम मुझे पसंद नहीं करते थे क्योंकि मैं तुम्हें पढ़ाई के लिए कहा करती थी।

परंतु मैं तुमसे तुम्हारे पिता से भी ज़्यादा प्रेम करती हूँ। मैंने देख लिया था कि यदि तुम नहीं पढ़ोगे तो तुम्हारा भविष्य कैसा होगा इसलिए मैंने तुम्हें खुद से दूर रखा।

जबकि मैं हमेशा तुम्हें याद करके रोती थी। यह सुनकर बबलू की आँखों में आँसू आ गए और इस प्रकार शिक्षा ने एक बच्चे की ज़िंदगी बदल दी।

**सीख :** इस कहानी से हमें ये सीखने को मिलता है कि सही मार्गदर्शन और संगत व्यक्ति के जीवन को बदल सकती है। शिक्षा में रूचि न होते हुए भी निरंतर प्रयास से सफलता मिल सकती है।

**हापुड़-उ.प्र.।** कार्तिक पूर्णिमा गढ़ गंगा मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय आध्यात्मिक मेले के शुभारंभ कार्यक्रम में नरेश तोमर,जिला अध्यक्ष भाजपा, हरेंद्र तेवतिया,विधायक गढ़मुक्तेश्वर, सतपाल यादव,ब्लॉक प्रमुख, स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे। मेले में 36 फीट ऊंचा शिवलिंग, 12 ज्योतिर्लिंग दर्शन, स्वर्ग की भव्य झाँकी, अमरनाथ गुफा तथा शिव-शंकर के महान अंतर की मनोहर झाँकी आकर्षण का केंद्र रहे। साथ ही आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी द्वारा सभी श्रद्धालुओं को परमात्म संदेश दिया गया एवं व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी द्वारा व्यसनों के दुष्प्रभावों के प्रति जागरुक किया गया।

**आबू रोड।** ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बाल दिवस के अवसर पर आबू रोड क्षेत्र के गांधीनगर में स्थित महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल स्कूल के परिसर में मोबाइल वैन द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत बच्चों और उनके अभिभावकों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरुक करते हुए ब्र.कु. राजीव भाई।

**सुल्तानपुर-ट्रांसपोर्ट नगर(उ.प्र.)।** ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर आयोजित दीपावली उत्सव में पुलिस अधीक्षक सोमेन बर्मा, शेमफोर्ड स्कूल के प्रधानाचार्य डॉ. अजय तिवारी, डॉ. रचना तिवारी, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. दुर्गा बहन, ब्र.कु. नीलम बहन तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

**बड़हरिया-गोपालगंज(बिहार)।** दशहरा झाँकी का शुभारंभ करने के पश्चात् वी.डी.ओ. संदीप कुमार तथा थानाध्यक्ष को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कांति बहन।